

विषय - सूची

भाग - 1

क्र.सं.	विषय	कवि	पृष्ठ सं.
पद्य विभाग			
1.	अनमोल वाणी :		1
	दोहे	कबीरदास	1
	पद	सूरदास	5
	दोहे	तुलसीदास	9
	दोहे	रहीम	12
2.	मनुष्यता	मैथिली शरण गुप्त	16
3.	एक तिनका	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	20
4.	चाँद का झिंगोला	रामधारी सिंह 'दिनकर'	24
5.	नीड़ का निर्माण फिर फिर	हरिवंशराय बच्चन	27
6.	काँटे कम-से-कम मत बोओ	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	33



भाग-2

क्र.सं.	विषय	लेखक	पृष्ठ सं.
गद्य विभाग			
1.	मधुर भाषण	गुलाब राय	39
2.	बोध	प्रेमचंद	47
3.	देशप्रेमी संन्यासी	संकलित	67
4.	गिल्लू	महादेवी वर्मा	72
5.	जननी जन्मभूमि	संकलित	88





अनमोल वाणी

कबीर

कवि परिचय :

कबीरदास का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ था । कहा जाता है कि वे एक तालाब के किनारे मिले । एक जुलाहा दंपति ने उनका पालन पोषण किया । वे कपड़ा बुनने का काम करते थे । ज्यादा पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन बड़े अनुभवी थे । बुद्धि, विवेक से काम लेते थे । बहुत बातें जानते थे । वे सभी धर्मों को बराबर मानते थे । वे ईश्वर के निर्गुण, निराकार रूप को मानते थे । उस समय धर्म और समाज में बड़ी गड़बड़ी थी । कबीर ने अपनी वाणी से उसे दूर करने का प्रयास किया । लोगों में जाति-पाँति, ऊँच-नीच का भेद भाव था । विभिन्न धर्मों के अनुयायी आपस में झगड़ते थे । बाह्य आडंबर, अंधविश्वास फैल गया था । कबीर जाति भेद, मूर्ति पूजा, बाहरी आडंबर आदि का विरोध करते थे । वे कहते थे कि सब मनुष्य बराबर हैं । वे बाहरी धार्मिक कर्म काण्ड की अपेक्षा भक्तिभाव पर बल देते थे । वे तीर्थ व्रत, जप-तप, मूर्ति-पूजा आदि बाहरी काम छोड़ सच्चे दिल से भगवान की भक्ति करने को कहते थे । वे सदाचार, सच्चाई, भाईचारे, धार्मिक सहिष्णुता का प्रचार करते थे । कबीर का व्यक्तित्व सादा-सीधा पर बड़ा प्रभावशाली था । उनकी वाणियों को उनके शिष्यों ने 'बीजक' नामक ग्रंथ में संगृहीत किया । उनकी भाषा मिश्रित खड़ीबोली है, जो उस समय जन समाज में प्रचलित थी । वे अपने गुरु रामानंद स्वामी का बड़ा आदर करते थे ।

दोहे

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै, साँच है, ताके हिरदै आप ॥
जो तोको काँटा बुबै ताहि बोय तू फूल ।
तोकु फूल को फूल है, बाको है तिरसूल ॥
धीरे-धीरे रे मना, धीरे-धीरे सब कुछ होय ।
माली सीचें सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय ॥

शब्दार्थ :

साँच - सत्य । बराबर - समान । तप - तपस्या, ज्ञान । झूठ - मिथ्या ।
पाप - पातक, कुकर्म, अघ । जाके - जिसके । हिरदै - हृदय । ताके - उसके ।
आप - ईश्वर, भगवान । तोको - तुझको । काँटा - कंटक । बुबै - बोता है । ताहि -
उसे । बोय - बो । तोक - तुझको । बाको - उस, उसको । तिरसूल - त्रिशूल, त्रिगुण ।
मना - मन । होय - होता । माली - पेड़ पौधे लगाने या सींचने वाला । सींचे - सींचन
करना, पानी देना, सींचाई । सौ - 100 । घड़ा - मटका, कलश, गागर, जलपात्र ।
ऋतु - मौसम ।

दोहों को समझें :

1. सत्य हमेशा महान होता है । संसार में सत्य के समान तपस्या या ज्ञान नहीं । उसी प्रकार झूठ या मिथ्या के बराबर पाप या बुरा काम नहीं । कारण बुराकाम करना पाप है । जिसके हृदय में सत्य का निवास है अर्थात् जो हमेशा सच बोलता है, उसका हृदय निर्मल है । पाप रहित है । उसके निर्मल हृदय में भगवान विराजमान करते हैं । अर्थात् सत्यवादी को भगवान के दर्शन मिलते हैं । वे महान होते हैं, तत्त्व दर्शी होते हैं । समाज सत्यवादी का आदर करता है, पापी का अनादर करता है ।
2. यह सत्य है, प्रमाणित है कि अच्छे काम करने वालों को अच्छा फल मिलता है और बुरे काम करनेवाले को बुरा फल मिलता है । अर्थात् सभी को कर्म के अनुसार फल भुगतना पड़ता है । जैसी करनी वैसी भरनी । कबीर के कहने का अर्थ है कि जो तेरे रास्ते में काँटा बोता है अर्थात् जो तेरी बुराई करता है, तुम उसके रास्ते पर फूल बिछा दो अर्थात् तुम उसकी भलाई करो । इसका नतीजा यही होगा कि तुम्हारी अच्छाई से उन्हें अच्छा फल मिलेगा । उसकी बुराई के लिए उसको बुरा फल मिलेगा । मतलब हुआ कि अच्छा काम करो और अच्छा फल पाओ ।